द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका :-

संबंधित साहित्य से पुनरावलोकन से तात्पर्य अनुंसंधान की समस्या से संबंधित पुस्तकें, ज्ञान कोश, पत्र-पत्रिकायें, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनसे शोध के दौरान अनुसंधानकर्ता को अपनी शोध समस्या का चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करना एवं कार्य आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

2.2 साहित्य पुनरावलोकन का महत्व एवं योगदानः-

- शोध के गुणात्मक तथा भावात्मक विश्लेषण में शोधकर्ता को नई दिशा देना।
- शोध हेतु विचार व्यवस्था, परिकल्पनाएं प्रदान करना जो समस्या में उपयोगी है।
- शोध समस्या के समाधान हेतु उचित विधि प्रक्रिया, तथ्यों के साधन तथा सांख्यिकी तकनीकी का सुझाव देना है।
- परिणामों के विश्लेषण, निष्कर्षों के तुलनात्मक अध्ययन को निर्धारित करना।
- अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है व संबंधित क्षेत्र में हुये कार्यों की सूचना देता है।

शोध से संबंधित साहित्य इस शोध की समस्या से प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित है। इसे निम्न दो भागों में बांटा गया है। :-

- पूर्व में किये गये शोध।
- वर्तमान में किये गये शोध।

2.3 पूर्व में किये गये शोध :-

1. मुत्थैया, नायडू तथा रंगा (1974) में अपने शोध कार्य बालविकास के कार्यक्रमों का मुल्यांकन में आन्ध्रप्रदेश के बालकों के विकास के लिए किये गये कार्यों का मूल्यांकन किया। इस अध्ययन के परिणाम इस प्रकार है। स्वास्थ्य कार्यक्रम व्यक्तियों की आवश्कताओं की पूर्ति कर रहे है। गांवों में उन्हें जो सुविधा प्राप्त हो रही है वे उसका ठीक ढंग से उपयोग कर रहे है। महिला मण्डल एवं आंगनवाड़ियों में ठीक से कार्य नहीं कर रहीं है।

2. मुरली धरण (1974) के द्वारा पूर्व प्राथमिक विद्यालयों और प्राथमिक विद्यालयों की निरंतरता का निरीक्षणात्मक अध्ययन किया गया है। ग्रामीणा क्षेत्रों के वे बालक जो बिना पूर्व प्राथमिक शिक्षा को ग्रहण किये प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश करते हैं। उन्हें अधिक परेशानी होती है। वे या तो ड्रॉप आउट हो जाते हैं या दोबारा उसी कक्षा में पढ़ते हैं। वे बालक जो पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण किये थे, जिनकी उम्र पांच वर्ष 11 महीने थी वे बहुत अच्छे थे भाषा एवं बौद्धिक विकास में। उन बच्चों से जिन्होंने पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण नहीं की थी और कक्षा 1 में थें वे 6 वर्ष 6 माह के थे। वे बालक जो बालवाड़ी का अनुभव रखते थें सामान्य व्यवहार तथा उपलब्धि में जबकि वे नहीं जो बालवाड़ी का अनुभव नहीं रखते थे।

D- 414

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1996) के द्वारा एकीकृत बाल विकास परियोजना को ई.सी.सी.ई. का सबसे बड़ा कार्यक्रम कहा गया है। इससे सभी आंगनवाड़ियाँ सम्मेलित है। इनके कार्यकर्ताओं को एक माह तक आंगनवाड़ी में प्रशिक्षण देना चाहिए। प्रशिक्षण देने के लिए विभिन्न शिक्षण सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए। प्रत्येक आंगनवाड़ी में बालकों के

लिए चित्रों की पुस्तके, खेल सामग्री, पोस्टर आदि को समय-समय पर बदला जाना चाहिए। इन्हें दोबारा बनाना चाहिए। इन प्रशिक्षणार्थियों द्वारा पर्यवेक्षक को पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए रिफ्रेशर कोर्स करनावा चाहिए, ये कोर्स भी प्री-सर्विस ट्रेनिंग या इन सर्विस ट्रेनिंग के रूप में हो सकते है।

4. तारापुर देशपाण्डे तथा पंडसे (1986) के द्वारा समेकित बाल विकास सेवा के अनौपचारिक घटक का अध्ययन किया गया है। इसमें 154 आंगनवाड़ियों का चयन किया गया था। इसमे हायर रेटिंग आंगनवाड़ी तथा लोअर रेटिंग आंगनवाड़ियाँ व आई.सी.डी. एस. के अंतर्गत न आने वाले संस्थानों के कार्यों की तुलना की गयी। व्यक्तिगत सूचनाएं पूर्ण रूप से गति का विकास धारणा बनाना तत्परता कौशल विभिन्नीकरण भाषा तथा सामाजिक कौशल आदि के कार्यों की तुलना की गयी। हायर रेटिंग आगनवाड़ी तथा आई. सी.डी.एस. के अलावा अन्य संस्थाओं का कार्य लोअर रेटिंग आगनवाड़ी से बेहतर रहा है।

5. शेषम्मा तथा करणम (1986) ने पूर्व प्राथमिक शिक्षकों की पूर्व प्राथमिक कार्यक्रम के प्रति अभिवृत्ति का निर्धारण किया गया। तीन समूहों 35 आंगनवाड़ी, 10 नर्सरी स्कूल तथा दो लैबोरेट्री स्कूल लिए गये। इनमें मिलने वाली खेल सुविधाओं में अंतर ज्ञात किया गया। सभी विद्यालयों के शिक्षकों ने खेल को आवश्यक माना आंगनवाड़ी में 97 प्रतिशत खेल को आवश्यक बताया। 80 प्रतिशत रेट खेल व ऑर्गेनाइज खेलों के प्रति रुचि दिखाई। पूर्व प्राथमिक मूल्याकंन स्केल के अंको के आधार पर आंगनवाड़ी को दो श्रेणियों में विभाजित किया गया। 25 को "बी" श्रेणी तथा 8 को "सी" श्रेणी प्राप्त हुई।

6. मुरलीधरन एवं पंकजम (1988) के द्वारा पूर्व विद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के विभिन्न प्रतिभाओं का बालकों पर प्रभाव मूल्याकंन किया गया। यह अध्ययन गांधी ग्राम तमिलनाडू में किया गया। 28 बालक तीन-पाँच वर्ष आयु वर्ग के थें 32 बालकों को रेण्डमली उस विद्यालय से लिया गया। जहां शिक्षकों को दो वर्ष 6 माह तथा 4 माह का आंगनवाड़ी प्रशिक्षण लिया गया था। उन बालको को बौद्धिक तथा भाषा विकास के अध्ययन में सर्वाधिक अंक आये। जिनके शिक्षकों को दो वर्ष का प्रशिक्षण दिया गया था। दो वर्ष का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले शिक्षकों के छात्र तथा आंगनवाड़ी के बालको में बहुत कम अंतर आता है। अतः यह सार्थक नहीं है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता यदि कुशलता पूर्वक प्रशिक्षित हो तो वे अधिक प्रभावी प्राथमिक कार्यक्रम प्रदान कर सकते है।

7. बीना, सुनीता एवं हंसा (1989) ने बड़ौदा आई.सी.डी.एस के अनौपचारिक पूर्व प्राथमिक घटक का अध्ययन किया। इस शोध का प्रथम उद्देश्य था। हायर और लोवर योजनाओं के बालकों का विकास की तुलना करना। तथा जो बालक आंगनवाड़ी नहीं जा रहे, उनकी प्रतिभा का अध्ययन करना। 60 बालक तीन-छः वर्ष के आंगनवाड़ी से चुने गये तथा दो वे थे जिन्हें पूर्व प्राथमिक शिक्षा नहीं मिली थी। आंगनवाड़ी को उच्च व निम्न श्रेणी में बांटा गया। इन श्रेणियों के कार्यकर्ताओं को बालकों की देखभाल एवं विकास के बारे में अवचेतना तथा इससे संबंधित कार्यों की तुलना की गयी। दोनो ही समूहों के शिक्षकों का स्तर लगभग समान रहा तथा इन आंगनवाड़ी के बालको की क्रियाओं में भी कोई अंतर नहीं दिखाई दिया। एक्सपोज्ड बालकों पर आंगनवाड़ी के अनुभवों का सार्थक प्रभाव रहा।

2.4 वर्तमान में किये गये शोध :-

8. खोसला (1991) के रिफ्रेशर कोर्स इन प्री स्कूल एजूकेशन फॉर आंगनवाड़ी वर्कर्स इन

9. मूल्यांकन का अध्ययन किया गया। जिसमें आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को दी जाने वाली रिफ्रेशर ट्रेनिंग को लेकर अध्ययन किया गया है। इन कार्यक्रमों की प्रभाविता के बारे में अध्ययन तथा कितने कार्यक्रम अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हुये कार्यकर्ताओं की पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंर्तगत अत्यधिक जानकारी प्राप्त हुई वह अधिक सहभागी साबित हुई। वातावरण से ही संसाधनों का उपयोग कर विभिन्न गतिविधियों का ज्ञान प्राप्त हुआ। माताओं व सहायक लोगों को शामिल करने से अधिक प्रभावी रहेगा अत्यधिक क्रियाकलाप व अन्य गतिविधियों के अनुपात में वृद्धि हुई। ट्रेनिंग के बाद ही कार्यकर्ताओं इस गतिविधि व शिक्षण सामग्री का पता चला था।

10. **यशोधरा (1991)** में पूर्व विद्यालय शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के संदर्भ में अभिभावकों व शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया। जिसमें 115 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को लिया गया था। जो ग्रमीण व शहरी दोनों केन्द्रों से थे। 8 पयर्वेक्षकों और 345 बेनीफिशिअरीज ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के अंतर मुख्य बिन्दु थे। शहरी आंगनवाड़ी के कार्यकर्ताओं में कम जॉब स्टेज था।

11. **सूद (1992)** ने समेकित बालविकास योजना आई.सी.डी.एस. पूर्व विद्यालयी घटकों का मूल्यांकन किया। इसके उद्देश्य थे।

(1) आई.सी.डी.एस. तथा गैर आई.सी.डी.एस. के पूर्व प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के समूहों के विकास का मूल्यात्मक मूल्यांकन करना।

(2) आई.सी.डी.एस. तथा गैर आई.सी.डी.एस. समूहों के कक्षा एक या दो के बच्चों के विद्यालय में प्रदर्शन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(3) आई.सी.डी.एस. तथा गैर आई.सी.डी.एस. के समूहों की माताओं में स्वास्थ्य तथा पोषण की आवश्यकता तथा पूर्व प्रथमिक शिक्षा के मूल्य के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

इस अध्ययन के लिए 64 पूर्व प्राथमिक विद्यालयी बच्चे तथा उनकी माताओं तथा कक्षा एक दो के 40 बच्चों की आई.सी.डी.एस. समूह में लिया जायेगा। जो एक वर्ष से अधिक आंगनवाड़ी में रहे थे जबकि गैर आई.सी.डी.एस. समूह में 16 पूर्व प्राथमिक विद्यालय बच्चे तथा उनकी माताओं तथा प्राथमिक विद्यालयी बच्चों तथा उनकी माताओं तथा कक्षा एक व दो के 40 बच्चों को शामिल किया जिन्होंने पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण नहीं की है। आंगनवाड़ी का अवलोकन पूर्व विद्यालयी बच्चों के लिए विकास मापन हेतु चिन्हांकन सूची शिक्षकों के लिए निर्धारण मापनी तथा माताओं के साक्षात्कार द्वारा संबंधित जानकारी एकत्रित की गई ।

प्रमुख निष्कर्ष-

1. पूर्व प्राथमिक विद्यालय के बच्चों का सर्वांगीण विकासात्मक स्तर का आई.सी.डी.एस. सेवाएँ बढ़ाती है।
2. आंगनवाड़ी से निकले बच्चे प्राथमिक विद्यालय में अन्य बच्चों से बेहतर प्रदर्शन करते है।
3. आई.सी.डी.एस. सेवाएँ बच्चों के पोषण आवश्यकताओं तथा पूर्व प्राथमिक शिक्षा के मूल्यों के प्रति माताओं की जागरूकता का स्तर बढ़ाती है।

12. पल्लैया (1993) के द्वारा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की अविरत शैक्षिक आवश्यकता का अध्ययन किया गया। जिसमें 60 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को लिया गया जो भोपाल के थे। उनका साक्षात्कार लिया गया। इसके उद्देश्य थे कार्यकर्ताओं के शिक्षात्मक दायित्व बाल विकास स्वास्थ्य दायित्व तथा सामुदायिक उत्तर दायित्व संबंधों अवचेतना का अध्ययन किया गया उनके लिए सेवा कालीन प्रशिक्षण आवश्यकताओं का निर्धारण करना। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की वर्तमान एवं अपेक्षित क्षमताओं में बहुत अन्तर है। जिसके कारण ये कार्यकर्ताओं के लिए सेवा कालीन प्रशिक्षण में क्रियाओं में खेल को मुख्य स्थान देना चाहिए। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता अपने आप को

अध्यापक व्यवसाय की श्रंखला मानते है और निहित समय पर ही आंगनवाड़ियों का संचालन करते है । परन्तु सत्य यह है कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता का कार्यक्षेत्र कल्याण सेवा और समुदाय संपर्क से जुड़ा है। अतः प्रशिक्षण एवं कार्य योजना बनाते समय इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

13. दिनकर (2000) ने भोपाल शहर के पूर्व प्राथमिक शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य का आलोचनाओं का अध्ययन निम्न उद्देश्यों से किया–

1. पूर्व प्राथमिक विद्यालय के विकास ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना।
2. भोपाल शहर से पूर्व विद्यालयों का क्रियान्वयन का अध्ययन करना।
3. पूर्व विद्यालय कार्यक्रम पर दिये गये राष्ट्रीय सुझावों के संदर्भ में शिक्षकों तथा विद्यालय प्रमुख की प्रतिक्रियाओं का अलोचनात्मक अध्ययन करना।
4. पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में उपलब्ध सेवाओं का अध्ययन करना।
5. पूर्व विद्यालय के प्रोफाइल का अध्ययन करना।
6. पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव पूर्ण क्रियान्वयन हेतु सुझाव देना।

इस अध्ययन के लिए शोध कर्ता ने भोपाल शहर के चुने हुए 6 विद्यालयों के न्यादर्श में शामिल किया। शिक्षकों, विद्यालय प्रमुख तथा छात्र से प्रश्नावली द्वारा तथा अवलोकन सूची द्वारा संबंधित जानकारी एकत्रित की गयी।

मुख्य निष्कर्ष है।

1. 50-80 प्रतिशत विद्यालयों में भौतिक सुविधाएं उपलब्ध है।
2. 50 प्रतिशत विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षक नियुक्त थे लेकिन किसी ने भी पूर्व शिक्षा हेतु विशेष प्रशिक्षण नहीं लिया था।
3. 50 प्रतिशत विद्यालयों में वाचन-लेखन पर जोर दिया गया।

14. सत्यार्थी (2005) ने ग्वालियर जिले में पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के क्रियान्वयन का अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ किया-

पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के क्रियान्वयन का

1. कार्यकर्ताओं के प्ररिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
2. अभिभावकों के परिप्रक्षेय में अध्ययन करना।
3. पूर्व प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के संबंध में कार्यकर्ताओं व अभिभावकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. मूलभूत संरचनाओं एवं क्रियान्वयन का निरिक्षणात्मक अध्ययन करना।

इसके लिए ग्वालियर जिले के 60 आंगनवाड़ियों को न्यादर्श में शामिल किया। अध्ययन संबंधी जानकारी प्रश्नावली, साक्षात्कार, तथा निरिक्षण अनुसूची द्वारा एकत्रित की गयी। मुख्य निष्कर्ष है।

1. मूलभूत संरचना तथा प्राप्त सामग्री का स्तर संतुष्टिजनक नहीं था।
2. सभी कार्यकर्ता प्रशिक्षित थे।
3. सभी कार्यकर्ता तथा अभिभावक पोषक आहार की गुणवत्ता से असंतुष्ट पाये गये।
4. 80 प्रतिशत कार्यकर्ता बदलाव चाहते थें।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
Regional Institute of Education
पुस्तकालय
Library

15. वर्मा (2007) के प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम के वर्तमान परिदृश्य पर एक अध्ययन किया। इसके निष्कर्ष निम्न लिखित है-

1. 30 प्रतिशत पूर्व प्राथमिक विद्यालय एन.सी.ई.आर.टी. के इस मानदण्ड की पूर्ति करते थे। जिसके अनुसार वाहन सुविधा के विना विद्यालय बच्चों के घर से 1/2 से 1 कि. मी. तथा वाहन सुविधा के साथ 1-7 कि.मी. के दायरे में होना चाहिए।
2. 90 प्रतिशत विद्यालय बच्चों को सुरक्षा प्रदान करते है।
3. 60-70 प्रतिशत विद्यालय में बच्चों के भाषा विकास तथा आत्मअभिव्यक्ति के विकास हेतु गीत व कविता का उपयोग किया जाता है।

4. 80 प्रतिशत विद्यालयों में वाचन हेतु अक्षरज्ञान पर तथा लेखन क्रिया पर जोर दिया जाता है।
5. 20 प्रतिशत विद्यालयों में प्रत्येक माह में मूल्यांकन किया जाता है।
6. 30 प्रतिशत विद्यालय के शिक्षक अभिभावक से संपर्क करते है।
7. 50-60 प्रतिशत विद्यालयों में सामूहिक खेल व टिफिन शेयरिंग क्रियाओं द्वारा बच्चों के सामाजिक तथा भावनात्मक विकास किया जाता था।

संबंधित साहित्य के पुनरवलोकन से ज्ञात होता है कि बाल विकास के कार्यक्रम का मूल्याकंन समेकित बालविकास सेवा के अनौपचारिक घटकों का अध्ययन, पूर्व प्राथमिक शिक्षकों की पूर्व प्राथमिक कार्यक्रम के प्राप्ति अभिवृत्ति का अध्ययन, समेकित बालविकास योजना के पूर्व विद्यालयों घटकों का अध्ययन, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की अविरत शैक्षिक आवश्यकताओं का अध्ययन आदि पर शोध कार्य हुए है। परन्तु जलगांव जिले में चल रहे आंगनवाड़ी कार्यक्रम का अध्ययन अभी तक नहीं हुआ है। इसलिए इस शोध में जलगांव जिले की 10 आंगनवाड़ियों का अध्ययन किया जा रहा है।

उपरोक्त अध्ययनों का अध्ययन करने से पता चलता हैं कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत आंगनवाड़ी के अध्ययन क्षेत्र में अधिक तथा व्यापक पैमाने पर शोध कार्य नहीं हुआ है। पूर्व में जो भी शोध कार्य हुये हैं। वे प्रस्तुत लघु शोध से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित नहीं है। उपरोक्त शोधों को प्रस्तुत शोध कार्य के लिए पृष्ठभूमि हेतु अध्ययन किया गया है।